IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, June 2024

^*lat dk miU;kl '/kkj' esa vkfnoklh tuthou dk fp=.k**

M,- lhek ;kno
हिन्दी (NET&JRF)

'kks/k lkjk'k

संजीव वर्तमान बोध के उपन्यासकार हैं। अपने उपन्यासों में वर्तमान जनजीवन के प्रत्येक पहलुओं का जीवंत आईना प्रस्तुत किया है। संजीव अपने सभी उपन्यासों में विषय–वस्तु की गंभीर और सघन खोजबीन के बाद इन जनजातीय समाजों की ओर आकृष्ट होते हैं। अपने जीवन का बड़ा हिस्सा जिस क्षेत्र में उन्होंने बिताया वह भी भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी समाजों का है। उस समाज की जीवन शैली, लोक–व्यवहार और रीति–रिवाजों को सहानुभूति एवं हार्दिक संवेदना से देखते और अंकित करते हैं। राजनीति एवं प्रशासनिक स्तर पर सक्रिय गठजोड़ किस तरह इस समाज के जीवन को भयावह और बोझिल बनाता है, संजीव की केन्द्रीय चिंता यही है। संजीव रचनात्मक स्तर पर उनकी संघर्ष–चेतना को वाणी देते हैं और उनके संघर्ष में वहीं उनके साथ खड़े दिखाई देते हैं। आदिवासी चिंतन की दृष्टि से संजीव के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हमारे सामने केन्द्रीय रूप में आदिवासियों का पीड़ित व शोषित रूप अंकित होता है ।

eq[; 'kCn& आदिवासी, सामाजिक संदर्भ, सहानुभूति,संवेदना,जनजातिय,लोकव्यवहार,पीड़ित।

çLrkouk

आदिवासी से हमारा अभिप्राय देश के मूल एवं प्राचीनतम निवासियों से है। आदिवासी साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें आदिवासियों का जीवन और समाज उनके दर्शन के अनुरूप अभिव्यक्त हुआ है। आदिवासी साहित्य को विभिन्न नामों से पूरी दुनिया में जाना जाता है। यूरोप और अमेरिका में इसे कलर्ड लिटरेचर, रवै लिटरेचर, अंग्रेजी में ट्राइबल लिटरेचर कहते हैं। भारत में इसे आदिवासी साहित्य ही कहा जाता है। संजीव एक गैर आदिवासी लेखक हैं जिन्होंने आदिवासी एवं उनके समाज को अपने साहित्य का विषय बनाया। संजीव ने आदिवासी समाज का संघर्षमय जीवन, दयनीय स्थिति को बड़े ही यथार्थपूर्वक एवं मार्मिक ढंग से दिखाया है।[1]

lkfgR;oykdu

संजीव एक कथाकार के रूप में इस पीढ़ी के प्रतिनिधि लेखक हैं। उपन्यासकार के रूप में उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत 'किशनगढ़ की अहेरी' (1981) से की थी। फिर 'सर्कस' (1984) से लेकर 'रह गयी दिशाएं इसी पार' (2013) तक उन्होंने बहुत सफलतापूर्वक एक ऐसे लेखक की छवि गढ़ी है जो अपनी अन्तर्वस्तु में सोहराव से बचता है और अपने उपन्यासों के लिए गहन शोध करके अपने लेखन में प्रविष्ट होता है। बिहार, बंगाल के कोलियरी क्षेत्र में संजीव को विशेष कार्य किये हैं। यहीं की कोयला खदानों के मजदूरों को केन्द्र में रखकर एक उपन्यास 'सावधान! नीचे आग है। (1986) का सृजन किया। इससे ही कथाकार संजीव की छवि संघर्ष करते हुए समुदाय का पक्ष लेने वाले लेखक की बन गई। इसी विषय पर उन्होंने धार (1990) जंगल जहाँ शुरू होता है (2000) जैसे उपन्यास लिखे।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, June 2024

v/;;u dk mís';

हमारे देश में अनेक जनजाति समुदाय हैं जो आज भी तथाकथित मुख्यधारा एवं उनके द्वारा बनाये गये नियमों–कानूनों से संघर्ष कर रहे हैं जो उनके सामाजिक जीवन के विरुद्ध हैं। उन्हें अपने हिसाब से जीने की आजादी कोई देना नहीं चाहता। सभी अपनी–अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उन्हें (आदिवासियों) एवं उनके समाज को नुकसान पहुँचा रहे हैं। वे अपने अस्तित्व, सम्मान एवं अस्मिता के लिए संघर्षरत हैं। उन्हें तथाकथित मुख्यधारा ने उनको सोचने के लिए मजबूर कर दिया है कि वे या तो इस सामाजिक राजनीतिक.. व्यवस्था के प्रति विद्रोह का स्वर बुलंद करे या फिर उस गन्दी राजनीति एवं सामाजिक भेद–भाव झेलते रहे। इसी यथार्थ को उजागर करना इस लेख का मूल उद्देश्य हैं।[2]

vkfnoklh dk lkekftd lanHkZ

आदिवासी समाज का संदर्भ बड़ा ही व्यापक है। पहले आये, फिर ब्रिटिश सरकार और अब स्वतंत्र भारत की सरकारें उन्हें वनों से बेदखल करती जा रही हैं। औद्योगिक विकास के नाम पर वनों को उजाड़ा गया। एवं आदिवासी समाज को अंधकार के गर्त में डाल दिया। 'धार' उपन्यास में संजीव ने आदिवासी समाज की इन्हीं समस्याओं को बाँसगढ़ा गाँव के माध्यम से यथार्थ का रूप दिया। बाँसगढ़ा गाँव आदिवासियों का है परन्तु गाँव में स्थापित हो रहे कल–कारखाने, कोलियरियाँ आदि उनके समाज के विकास के लिए कुछ नहीं करतीं, उल्टा उन्हें इन सबके वजह से आर्थिक, सामाजिक, प्राकृतिक आदि विभिन्न प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। पूँजीपति, ठेकेदार माफिया, पुलिस व्यवस्था के कारण उनका जीवन शोषित, आतंकित, अभावग्रस्त और असुरक्षित मिलता है। मैना जो इस उपन्यास की मुख्य पात्र है और अविनाश शर्मा शोषण के खिलाफ विद्रोह करते हैं और एक महत्वपूर्ण भूमिका अपनाते हैं। 'धार' उपन्यास में इन्हीं सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है। इस संदर्भ में कमलेश कुमार लिखते हैं "आदिवासियों का समाज वस्तुतः वनों में निवास करने वाले कृषकों का समाज है। कृषि और वन्य सम्पदा के सहारे प्रकृति और संततियों के साहचर्य में सहयोगी बनकर जीवन जीने की कला इन आदिवासियों ने युगों से आत्मसात् कर रखी है।"[3]

vkfnoklh lekt esa f'k{kk dk lanHkZ

भारत को आजादी दिलाने में जितना योगदान हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख आदि समुदायों ने दिया है, उतना ही योगदान आदिवासी समाज का भी रहा है। सिद्धू, कान्हू, बिरसा जैसे क्रांतिकारी आदिवासी समाज के पुत्र थे। परन्तु आजादी के बाद आदिवासी समाज पर सरकार का ध्यान नहीं गया। आदिवासी समाज में ज्यादातर शिक्षा का अभाव है। इसी अज्ञानता के कारण पूँजीपतियों द्वारा उनका शोषण होता है। मैना इस बात को समझती है। इसलिए वह अपने बच्चों को शिक्षित करने का प्रयास करती है और कहती है, तू सबका भी हालत ऐसा ही होगा। न पढ़ना न लिखना। कल से टैम निकाल के शरमा बाबू के पास नई गए पढ़ने तो खाना बन्द।'[4] आदिवासी समाज भले ही शिक्षित न हो परन्तु वे अपने आने वाले पीढ़ी के शिक्षा के द्वारा शोषण के घुटन से मुक्त कराना चाहती है।

vkfnoklh lekt esa ukjh dh fLFkfr

सृष्टि की निर्माता नारी है। आदिवासी समाज के परम्परा में आदिवासी नारी की स्थिति तो अच्छी है परन्तु समाज में नारी यहाँ अन्य तरह से शोषित हो रही है। मैना, टिटिया आदि प्रमुख नारी पात्र हैं। आदिवासी समाज की स्त्रियाँ अपने लोगों से कम तथा प्रशासन व्यवस्था के लोगों से अधिक शोषित होती है। भोली–भाली संथाल महिलाएँ किस प्रकार रेलवे पुलिस के हवस का शिकार होती धार उपन्यास में दिखाया गया है। मगर यह पूछने पर कि रेलवे पुलिस गाँव में क्यों आती है? मैना उत्तर देती

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, June 2024

है कुत्ता काये को आता है? ..... कोई भी जनता ई कुत्ता लोग से बचा कोई नही।'[5] मैना की माँ को डायन साबित कर गाँव से खदेड़ना, पूँजीपतियों की ही साजिश है। शोषण पेट की मार से बदहाल स्त्री अपने आपको चकला घरों में बेचने को मजबूर है। जेल में जेलर के हवस का शिकार मैना पहले ही बन चुकी थी। उपन्यासकार ने जहाँ समाज में आदिवासी महिलाओं पर संकीर्ण और बीमार मानसिकता वाले पुरुष वर्ग को आईना दिखाया वहीं मैना के रूप में एक सशक्त महिला चरित्र का निर्माण भी किया है।

vkfnoklh lekt dh vkfFkd lnHk&

धार उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक आदिवासी समाज को आर्थिक विषमताओं से संघर्ष करते दिखाया गया है। आदिवासी समाज को रेलवे से आये सामान की सीलतोड़ी करनी पड़ती है। वैगनों के नीचे–नीचे जमीन पर पड़ी चीनी के कुछ दानों को वे चुनते हैं, कूड़ा–कचड़ा चुनते हैं। परन्तु यहाँ भी वे पूँजीपतियों के अधीन हैं। सीताराम चुने हुए चीनी और कूड़ा का दलाल है। मैना बोलती है धन्न मनाओ रेल कम्पनी का कि बघड़ा–बघड़ा कट जाता है और हमको भोज खाने को मिल जाता है। धन्न मनाऊँ रेलवे पुलिस का, हमको सीलतोड़ी कराता, हमारा बहिन, बेटी, माँ के साथ रंडीबाजी करता कि हमको दू–चार पैसा भेज जाता, धन्न मनाऊँ सरदार निहाल सिंह का कि हमरा चोरी हजम करके ट्रक से रेलवे कारखाना का कूड़ा खहियाँ फेंकता कि हम लोहा–पीतल बीन–बान के उनको बेच के पेट चलाता और धन्न मनाऊँ महेन्द्र बाबू की तेजाब का फैक्ट्री खोल के हमरा कुछ आदमी की रोजी देता, चाहे कुत्ता बना के ही कार्यें न दे। इतनी भयानक एवं दयनीय आर्थिक स्थिति और किसी की क्या हो सकती है। मैना भी इस विषय पर बोलती है। कोयला का खजाना पर हम रहता है फिर भी कंगाल। आदिवासी समाज दिन–प्रतिदिन और गरीब होते जा रहे हैं और पूँजीपति को दिन–दुगुनी रात चौगुनी देश की सम्पदा को लूटते जा रहे हैं। प्रो० सुवास कुमार के शब्दों में आदिवासी कब से गरीब बनता जाता है यही बाँसगढ़ा गाँव की कहानी है।'[6]

fu"d"kZ

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि संजीव आदिवासी जनजीवन के यथार्थ को भलीभाँति जानते हैं यही कारण है कि संजीव अपने उपन्यासों में जीवन वृत्त को बड़ी तल्लीनता के साथ अभिव्यक्त किया है। जिसमें उनका अतीत व वर्तमान नष्टदायक उपस्थिति दर्ज कराता है। प्रो० यशवंतकर लिखते हैं संजीव जी ने आदिवासियों की दशा और परिणामों का विवेचन मानवीय संवेदना के परिप्रेक्ष्य में किया है अर्थात् उपन्यासकार ने उनकी त्रासदी और संघर्ष को वाणी देने का प्रमाणिक प्रयत्न किया है। इस तरह आदिवासी के जीवन को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मंतव्य दिये हैं। आदिवासी के प्रति सजग व चेतना लाने के लिए सराहनीय कार्य साहित्यकार कर रहे हैं। अतः अज्ञान व अशिक्षा के कारण सभी सुख सुविधाओं से वंचित थारू आदिवासी गरीबी, कुपोषण से जूझते हुए अभाव ग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर हैं जिसका वर्णन जंगल जहाँ शुरू होता में स्पष्ट दिखायी देता है किस तरह स्त्री–पुरुष दोनों ही प्रताड़ित हैं व गरीबी भरा जीवन जी रहे हैं। सच्चे अर्थों में संजीव जी ने लोकतंत्र की जड़ों को तलाशने का कार्य किया है जो थारू जनजाति के जीवन संघर्ष को देख कर स्पष्ट कर देता है। उसके जीवन की गाथा गाता उपन्यास जंगल जहाँ शुरू होता है वास्तविकता को उजागर करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कमलेश कुमार, आदिवासी विमर्श अवधारणा और आंदोलन पहला संस्करण–2014, तेज प्रकाश, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 15।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, June 2024

2. संजीव, 'धार' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या 83।
3. संजीव, 'धार' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या 32।
4. संजीव, 'धार' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या 54।
5. संजीव, 'धार' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या 56।
6. सं० सुबास कुमार, गिरीश कामिंद, कथाकार संजीव, शिल्पायन प्रकाशक, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या 92 ।